प्रवचन प्रतियोगिता (उत्तम श्रेणी)
"श्री प्राणनाथ जी की पहिचान"

(श्री राजकुमार त्यागी–लखनऊ)

इस संसार में आत्मा या परमात्मा या परब्रह्म की बाबत दो प्रकार से जानकारी मिलती है। एक किसी शास्त्र पुराण व ग्रन्थ के माध्यम से दूसरे किसी साधू, संत, महात्मा या पैगम्बर आदि द्वारा चाहे वह निराकार वादी है या साकार वादी है। लेकिन वह परब्रह्म की वास्तविक पहचान तक पहुँचता भी है या नहीं इसका निर्णय ही आजकल इस संसार का कोई ग्रंथ, मत-मतान्तर कोई धर्म व कोई साधू, महात्मा या संत पूर्णरूपेण नहीं कर पाया। यजुर्वेद कह रहा है "कि इन नाना मत-मतान्तरों व अनेक देवों की उपासना ने सत्य वस्तु परब्रह्म के स्वरूप को ढक लिया है। उधर श्रुतियां कह रही हैं कि वह परब्रह्म सदा आनन्द उल्लास देने वाला है सबका उत्थान करने वाला है सबका आश्रयस्वरूप है। सत चित आनन्द अनन्त एवं अद्वेत भावों से पूर्ण हैं जहां पाँच तत्व तीन गुण व माया का लेशमात्र भी नहीं। जिसे पाने के बाद कुछ पाना शेष नहीं रहता।

श्रुतिया कह रही हैं कि उस परब्रह्म का नाम अगर जीव एक बार भी जीभ से उच्चारण कर लेता है तो उसके करोड़ो जन्मों के पाप उसी क्षण कट जाते हैं। श्रुतियां कह रही हैं कि अगर परब्रह्म को पाना है तो उसके स्वरूप को यथार्थतः जानकर भजो।

परन्तु कोई भी सम्प्रदाय धर्म मत-मतान्तर या साधु संत महात्मा उस परब्रह्म का नाम क्या है उसका स्वरूप क्या है उसकी लीलायें क्या हैं उसका अखण्ड धाम क्या है नहीं बता पाया। स्वयं उस परब्रह्म ने आकर बताया जिसके लिए श्री मुख वाणी कह रही है।

१. दौड़े कई पैगम्बर,
कई तिथंकर अवतार।
अव्वल से आखिर लग,
किन खोल्या न वका द्वार

२. छोटे बड़े जिन खोजिया,
न पाया करतार।
संसय सब कोई ले चल्या
छुटा नहीं विकार॥

३. जैसे बालक बावंरा,
खेले हंसता रोय।
ऐसे साधू शास्त्र में,
दृढ़ न शब्दा कोय॥

Nijanand App

स्वामी जी ने समस्त संसार के साधू, संतों, शास्त्रों को पागल बालक की तरह संज्ञा दी है।

आइये विचार करें कि वह परब्रह्म प्राण नाथ जी अक्षरातीत कौन है ?

पुराण संहिता श्लोक ५२ से ७१ कहता है "सुन्दरी एवं इन्दरा दोनों कृष्ण प्रिया देव चन्द्र जी और सूर्य (महिराज) इन नामों से प्रकट होंगी। वह ब्रह्म ज्ञान देकर माया के अंधकार का नाश करेंगी।"

वृहत सदा शिव संहिता श्रुति रहस्य श्लोक १६ कहता है-

"आनन्द रूपी जो सखी वृज और वृन्दावन में थीं वह कलयुग में अवतरित होंगी तथा कलयुग का अन्धकार मेट के अपने पद को लौट जायेंगी।"

सन १६३८। मारवाड़ देश। उमर कोट ग्राम। श्री मत्तू मेहता पिता व श्री कुंवर बाई माता। जहाँ श्री देव चन्द्र जी आये। चालीस वर्ष तक सब धर्मों की खोज की। १४ वर्ष लगातार भागवत भी सूनी परन्तु परब्रह्म की बावत कुछ नहीं जाना। श्याम जी के मन्दिर में श्री देव चन्द्र जी के सामने एक दिव्य स्वरूप खड़ा है। पूछता है मुझे जानते हो मैं कौन हूँ तुम अपने आपको जानते हो कौन हो। तुम्हारा वतन कहाँ है तुम यहाँ आये क्यों हो। जब देव चन्द्र जी भी १४ वर्ष भागवत सुनने के बाद व ४० वर्ष खोज करने के बाद सही उत्तर नहीं दे पाए तो स्वयं ने बताया-

"निज नाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत।
सो तो अब जाहिर भये सब बिध वतन सहित॥

वह दिव्य स्वरूप जो परमधाम की श्यामा महारानी भी नहीं पहचान पा रही हैं "मेरा प्राणनाथ है" यही वह परब्रह्म का नाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत है, जिसके लिए श्रुतिया कह रही हैं कि जीव अगर एक बार भी जीभ से उच्चारण कर लेगा तो करोड़ों जन्मों के पाप उसी क्षण कट जाएंगे।

यही वह प्राण नाथ जी हैं जिनके लिए वेद कह रहे हैं एको ब्रह्मा दिव्यानासती।

कुरान शरीफ कह रही है "कलह अल्लाह अहद' The Supreme truth God is only one "Bible"

नानक एको सुमरिये,
जन्म मरण दुख जायें।

कबीरदास जी कह रहे हैं-

"जो साहेब किसी का होत है,
वह पूत किसी का नाही।
जो पूत किसी का होत है,
वह साहेब सबका नाहीं॥

उस दिव्य स्वरूप में धनी देव चन्द्र जी ने प्रवेश किया और जागनी कार्य आरम्भ हुआ।

कुरान की आयतें व हदीसें कहती है कि अल्ला ताला वक्त आखरत के ग्यारवीं सदी में आयेंगे तथा दो जामे पहनेंगे।

Nijanand App

यह वही दूसरा तन है जिसका शरीर का नाम महिराज ठाकुर पिता केशव ठाकुर। निवास जाम नगर तथा भाई गोवर्धन ठाकुर। १२ वर्ष की उम्र में अपने भाई गोवर्धन ठाकुर केसाथ सतगुरु के चरणों में गए।

श्री देव चन्द्र जी उनसे कह रहे हैं कि ब्रह्मज्ञान से संसार को आलोकिक करने हेतु परमात्मा ने तुम्हें यहाँ भेजा है। परमधाम का कुल ज्ञान व शास्त्रों के छिपे रहस्य अब आपसे प्रकट होंगे तुम इन्द्रावती की आत्मा हो।

श्री महिराज ठाकुर अपने तन मन धन से धर्म कार्य में लग गये। श्री विहारी जी ने कितना विरोध व कठिनाइयाँ पैदा कीं आप सब लोग बीतक में सुन चुके हो।

सुन्दर साथ की सेवा व धर्म कार्य बिन कारण कारज नहीं होते। स्वामी जी को जेल जाना पड़ा। बहुत परेशान इन्द्रावती की आत्मा विलख विलख कर कहती है कि धनी सुन्दर साथ की सेवा का क्या यही फल है जो जेल में भी जाना पड़ा।

परन्तु यह ग्रंथों में लिखा हुआ था कुरान कहता है कि जब वखत आखरत को अल्ला ताला आयेंगे तो वह हबसे की जेल में होंगे और आसमान से मिश्री की ईंटें गिरेंगी। (यहीं पर स्वामी जी को रास प्रकाश खटरूती उतरे)

जैसे ही इन्द्रावती की आतम को तड़फते देखा व शरीर छोड़ने को हुई तो द्विव्य युगल स्वरूप सामने आ खड़े हुए।

यह दिव्य स्वरूप मेरा प्राण नाथ है जो जन्म-मरण से रहित है। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सबका है जिसको कोई उपाधि नहीं लगती।

नेति-नेति कह वेद निरूपा।
निजानन्द निरूपाधि अनूपा॥
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना।
जाके अंश से उपजे नाना॥

यह वही मेरा प्राणनाथ है जिसके लिए त्री देवा (ब्रह्मा विष्णु महेश) ५ तत्व का शरीर धारण किये अपनी मुक्ति के लिए तपस्या कर रहे हैं 'देवी भागवत'। मेरा प्राणनाथ न महामती है न संत हैं न महात्मा हैं न योधा हैं वह तो पूर्ण परब्रह्म अनादि उक्षरातीत है। महामती की उपाधि इन्द्रावती के लिए आती है न कि श्री प्राणनाथ जी के लिए।

श्री मुखवाणी कह रही है–

तारतम तेज प्रकाश पूर्ण इन्द्रावती के अंग।
ये मेरा दिया मैं दिखाए मैं इन्द्रावती के संग॥

इन्द्रावती के मैं अंगसंग, इन्द्रावती मेरा अंग।
जो अंग सोपें इन्द्रावती को ताए प्रेमे खिलाऊं रंग

सुखदेऊं सुखलेऊं सुख में जगाऊ साथ।
इन्द्रावती को उपमा में देई मेरे हाथ॥

जैसे ही दिव्य युगल स्वरूप ने अन्दर प्रवेश किया तो–

प्रकटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टी और जो ब्रह्मवतन।
श्री महामत इन प्रकाश ते, अखंड कियो सब जन॥

Nijanand App

सम्वत् १७३५ में हरिद्वार में कुम्भ के मेले में सब सम्प्रदायों के आचार्य व अनुयायी उपस्थित थे। जब सब आचार्य अपने-अपने सम्प्रदाय या मत की पद्धति का वर्णन कर चुके और कोई भी परब्रह्म के स्वरूप व जीवों की मुक्ति का उचित मार्ग नहीं बता पाए तो सबने स्वामी जी से पूछा कि आप कौन है तथा आपकी पद्धति क्या है–

पूर्ण ब्रह्म स्वरूप साथ है स्वामी जी कह रहे हैं कि अगर मेरी पहचान करनी है तो ब्यास जी द्वारा रचित हरवंश पुराण देखिये जिसमें लिखा है–

अभावि नो भविष्यन्ति, मुनियो ब्रह्मरूपणा,
उत्पन्नाये कलो युगे, प्रधान पुरुष आश्रय:
योगान तान श्रवान, जोव सृष्टी उदारणाम्॥

हे राजा जन्मय जय इस जगत के अन्दर एक अनहोनी बात होने वाली है कि परब्रह्म उत्तम पुरुष अनादि अक्षरातीत व उनकी आत्मायें इस कलयुग में आने वाले हैं। उनकी आत्मायें भी ब्रह्म रूप ही होंगी। वह एक आत्म तत्व के ज्ञाता होंगें। एक उत्तम पुरुष अक्षरातीत को मानेंगे तथा सब धर्मों के झगड़ों को मिटाकर जीव सृष्टी का उद्धार करेंगे उनका ज्ञान निश्चयात्मक होगा।

यही बात भविष्य पुराण में शिव जी पार्वती से कह रहे हैं कि उमा वह परब्रह्म २८वें कलयुग में जीवों को मुक्त करने के लिए आ रहे हैं।

ईसामसीह को जब दीवार में चुना जा रहा था उन्होंने अपने शिष्यों (Followers) से कहा कि मेरी उम्र ३३ वर्ष है जब इसकी आधी सदियाँ बीत जायेंगी अल्लाताला अपनी उम्मत के साथ इमाम मेंहदो बन कर इस दुनियाँ में जाहिर होंगे।

गुरु नानक देव कह रहे हैं–

उठ गई सभा मलेस को, कर कूड़ा उपकार।
नेह कलंक जब आयेगा महाबली अवतार॥
खांडा (श्री मुखवाणी) जाके हाथ में
कलंगी होवे शीश।
अंग संग रक्षा करे,
कलंगी धर जगदीश॥

बीतेगा उन्नतालीसा, दगेगा चालीसा
होसी कोई मर्द, मर्द का चेला।
नानक साईं विखाई ओह सच सच दी बेला

यही बात कुरान शरीफ की आयतें, हदीसें कह रही हैं कि अल्लाताला अपनी उम्मत के साथ फरदा रोज यानी ग्याहरवीं सदी में आयेंगे।

सोरा उलू फजर सोरा उल कदर यह लैलतुल कदर की रात हजार महीने से बड़ी होगी जिसमें अल्लाताला की उम्मत जमीन पर आएगी तथा अर्से खैर (इल्मे लदुनी-ब्रह्मज्ञान) साथ होगा।

स्वामी जी कह रहे हैं कि इन सब ग्रंथों के समय का मिलान किया जाय तो यह १७३५ वही साका १६०० सालवान है। मैं अपने वतन

Nijanand App

की कुल न्यामतें ब्रह्म ज्ञान के खजाने सहित आ गया हूँ परब्रह्म का पूर्ण स्वरूप नाम, धाम व लीलायें बताई यह मेरा ज्ञान निश्चयात्मक निकलंक है निज स्वरूप का ज्ञान कराया ।

यही वह यथार्थ स्वरूप है जिसके लिए श्रुतिया कह रहीं कि परब्रह्म को पाना है तो उसके यथार्थ स्वरूप को जान कर भजो तभी मुक्ति है ।

स्वामी जी श्री मुखवाणी में कह रहे हैं–

१. बुध नेह कलंक आएके,
मार कलयुग करसी दूर ।
असुराई सबों मेट के,
देसी मुक्त हजूर ।।

२. बिजिया अभिनन्दन बुध जी'
लिखी यही सरत ।
वह सृष्ट जाहेर होय के,
सबको देसी मुक्त ।।

३. साहेब आए इन जिमी,
कारज करने तीन ।
सो सबका झगड़ा मेट के,
या दुनियाँ या दीन ।।

यही बात स्वामी जी १७३६ में १२ मोमिन भेजकर औरंगजेब के दरबार में कही कि बखत आखरत का इमाम मेहदी आ गया है जैसा कि कुरान की हदीसें आयतें कह रही हैं ।

यह बात औरंगजेब व उसके दरबार ने स्वीकार की इसका सबसे बड़ा प्रमाण औरंगजेब का इतिहास जिसके चार भाग (Volumes) है जो अरबी में है। इसका अरबी से अनुवाद सर यदुनाथ सरकार न किया इंगलिश (English) में तथा अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद डॉ. रघुवीर सिंह His Highness Sit moun (सितमऊ) ने किया।

औरंगजेब ने मरने से पहले दो पत्र पुत्र आजम, आलम व काम वख्श को करुणा भरे लिखे एक पत्र में १२ बातें हैं उन्होंने कहा कि इन १२ बातें लिखने का भी विशेष महत्व है।

मालिक आया। मेरे घर रहा। परन्तु मेरी अंधी आखें पहचान न कर सकीं मैं खाली हाथ आया था। पापों की गठरी साथ लेकर जा रहा हूँ मालूम नहीं मालिक मेरे साथ क्या न्याय करेगा या क्या दण्ड देगा। परन्तु मुझे उसकी गरिमा मालूम है वह बहुत दयावान व मेहरबान है।

इस प्रकार से हम सब औरंगजेब के समान हैं। धनी आया है उसका परमधाम का कुल ज्ञान, कुल खजाना कुल न्यामतें आयी हैं परन्तु हमारी अंधी आखें पहचान नहीं कर पा रही हैं इतना परमधाम का जाग्रत ज्ञान होते हुए हम अंधेरे में हैं।

क्योंकि मेरा प्राणनाथ सत चित आनन्द अनन्त अद्वैत व नूर मई है और हम देखना चाहते हैं इन्दरी मन व बुधि से जबकि श्रुतिया कह रही हैं कि परब्रह्म इन्दरी मन बुधि से परे का विषय है और यहाँ की जितनीं भक्तियाँ हैं चाहे वह साकार नवधा भक्ति है या निराकार की अष्टांग भक्ति है सब शारीरिक मन बुद्धि से प्राकृतिक है इसीलिए वह जप तप दान व भक्ति से नहीं मिलता। उसके लिए चाहिए शुद्ध हृदय का आत्मिक प्रेम जो हमने सांसारिक इच्छापूर्ति संसार के पति पत्नी, भाई लड़का इत्यादि में लगा रखा है इसलिए पहचान आसान नही है। उस परब्रह्म को पहचान कोई नहीं करा सकता जब तक वह स्वयं अपनी कृपा न करें, स्वयं अपने चरणों में न ले लें या अपना ले जिसका उनसे सम्बन्ध हो वही पहचान कर सकता है।

प्रणाम जी

Nijanand App